Shodh Martand

ISSN- 2349-3844

Year -8	Jan-December 2022	Volume –16

SHODH –MARTAND

A PEER REVIEWED & REFEREED INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES
(HALF-YEARLY RESEARCH JOURNAL)

RAGHUVEER MAHAVIDHYALAYA
RAGHUVEER NAGAR, THALOI,
MACHHALISAHAR, JAUNPUR U.P (INDIA)

AFFILETED
VEER BAHADUR SINGH PURVANCHAL UNIVERSITY
JAUNPUR (U.P.) (INDIA)

Principal-Editor
Prof. Ram Sewak Dubey

Chif Editor
Dr. Vinod Kumar Tripathi

Editer
Dr. Vinay Kumar Tripathi

Sub. Editors
Dr. Rajesh Kumar Tiwari
Dr. Santosh Kumar Upadhyay
Dr. Kripa Shankar Yadav

Shodh Martand

ISSN- 2349-3844

SHODH – MARTAND

A PEER REVIEWED & REFEREED INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES

Year -8	Jan-December 2022	Volume –16

Contents

❖ सम्पादकीय

समसामयिक लेख

- नयी शिक्षा नीति 2020 – संस्कृत भाषा
  डॉ0 विनय कुमार त्रिपाठी 01–04

शोध–पत्र :–

- उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन
  प्रो0 के0के0 तिवारी व ज्योति पाण्डेय 05–10
- भारत–भारतीः समीक्षात्मक अध्ययन
  डॉ0 शिखा तिवारी 11–16
- 'स्मृति त्रिगुणात्मिका सृष्टि में निस्त्रैगुण्य (सांख्ययोग और वेदान्त के परिप्रेक्ष्य में)
  सौरभ तिवारी 17–22
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना में गबोकारो जिला की ग्रामीण जनजातीय महिलाओं के जीवन पर प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
  डॉ0 इन्दिरा श्रीवास्तव व नीतू शुक्ला 23–31
- वाद्यों में वाद्य प्रचलित अवनध्द वाद्य 'तबला'
  प्रो0 मीना सिंह व शैल गुप्ता 32–37
- आधुनिक युग में अंकीय विपणन, रणनीतियाँ एवं इसकी समस्याए
  डॉ0 राजेन्द्र कुमार मिश्र व संदीप कुमार तिवारी 38–49
- संत कवि कबीर की सामाजिक चेतना
  डॉ0 अल्ताफ व मयंक तिवारी 50–54
- प्राचीन भारतीय सामाजिक चिन्तन के दार्शनिक पक्ष : एक मीमांसा
  डॉ० कृपाशंकर पाण्डेय 55–61
- शिक्षण एवं अधिगम में नावाचार
  डॉ0 अच्युत कुमार यादव 62–69

- साहित्यिक शोध – अर्थ – स्वरूप एवं क्षेत्र
  डॉ0 वर्षा रानी 70–78
- पवित्रता की प्रतीक मां गंगा को अविरल निर्मल एवं स्वच्छ बनानें में युवाओं की भूमिका
  इंदुजा दुबे व डॉ अतुल कुमार दुबे 79–86
- **A Study of Performance Appraisal System and Its Impact on Employee Satisfaction and Employee Motivation in Higher**
  Anuj Kumar Singh & Dr. Ashish Kumar Shukla 87–96
- **Impact of Gandhian Philosophy-Ahimsa in Contemporary Society – An Analysis**
  Dr. Rajesh Kumar Tiwari 97–102

पुस्तक समीक्षाः–

- धरती के गीत
  डॉ0 विनय कुमार त्रिपाठी 103–106

ISSN- 2349-3844

सम्पादकीय

आज कल कुछ चीज मनुष्य के संज्ञान में होती है। लेकिन संज्ञान में होते हुए भी वह उस चीज को करता नहीं है। जिससे उसका प्रतिफल जो होना चाहिए वह नहीं होता। इसी के सापेक्ष एक बहुत सुंदर दृष्टांत है कि

एक कुम्हार जो रास्ते पर चलते समय बाजार से लौटता था अपनी मटकियां बेच कर, अपने गधे को लेकर। उसे जमीन पर एक हीरा पड़ा मिल गया। बड़ा हीरा! उठा लिया सोचकर कि चमकदार पत्थर है, बच्चे खेलेंगे। फिर राह में ख्याल आया उसे कि बच्चे कहीं गंवा देंगे, यहां–वहां खो देंगे, अच्छा हो गधे के गले में लटका दूं। गधे के लिए आभूषण हो जाएगा।

कुम्हार के हाथ हीरा पड़े तो गधे के गले में लटकेगा ही, और जाएगा कहां! उसने गधे के गले में हीरा लटका दिया। रास्ते में एक जौहरी अपने घोड़े पर सवार आ रहा था। देख कर चौंक गया। बहुत हीरे उसने देखे थे, पर ऐसा हीरा नहीं देखा था। और गधे के गले में लटका! रोक लिया घोड़ा। समझ गया कि इस मूढ़ को कुछ पता नहीं है। इसलिए नहीं कहा कि इस हीरे का कितना दामय कहा कि इस पत्थर का क्या लेगा? कुम्हार ने बहुत सोचा–विचारा, बहुत हिम्मत करके कहा कि आठ आने दे दें।

जौहरी तो बिल्कुल समझ गया कि इसे कुछ भी पता नहीं है। आठ आने में करोड़ों का हीरा बेच रहा है! मगर जौहरी को भी कंजूसी पकड़ी। उसने सोचारू चार आने लेगा? चार आने में देगा? आठ आने, शर्म नहीं आती इस पत्थर को मांगते। कुम्हार ने कहा कि फिर रहने दो। फिर गधे के गले में ही ठीक। चार आने के पीछे कौन उसके गले में पहनाए हुए पत्थर को उतारे!

जौहरी यह सोच कर आगे बढ़ गया कि और दो आने लेगा, ज्यादा से ज्यादाय या आगे बढ़ जाऊं तो शायद चार आने में ही दे दे। मगर उसके पीछे ही एक और जौहरी आ गया। और उसने एक रुपये में वह पत्थर खरीद लिया।

जब तक पहला जौहरी वापस लौटा, सौदा हो चुका था। पहले जौहरी ने कहारू अरे मूर्ख, अरे पागल कुम्हार! तुझे पता है तूने क्या किया? करोड़ों की चीज एक रुपये में बेच दी!

वह कुम्हार हंसने लगा। उसने कहारू मैं तो कुम्हार हूं, मुझे तो पता नहीं कि करोड़ों का था हीरा। मैंने तो सोचा एक रुपया मिलता है, यही क्या कम है! महीने भर की मजदूरी हो गई। मगर तुम्हारे लिए क्या कहूं, तुम तो जौहरी हो, तुम आठ आने में न ले सके। करोड़ों तुमने गंवाए हैं, मैंने नहीं गंवाए। मुझे तो पता ही नहीं था।

तुम्हें भी पता नहीं है कि तुम कितना गंवा रहे हो! मगर तुमसे भी ज्यादा वे लोग गंवा रहे हैं जिन्हें शास्त्र कंठस्थ हैंय जिन्हें वेद, उपनिषद, कुरान याद हैंय जो रोज हीरों की बातें कर रहे हैं। तुमसे भी ज्यादा वे गंवा रहे हैं। कम से कम उन्हें तो बोध होना चाहिए। लेकिन परमात्मा की बातें चलती हैं, खोज कोई नहीं करता। आत्मा की बातें होती हैं, लेकिन ध्यान कोई नहीं करता। मंदिर में पूजा–पाठ के आयोजन होते हैं, मगर पूजा कहां, प्रार्थना कहां!

आज हम सबको अपने जीवन में उन सारी चीजों को बहुत मजबूती से समाज के लिए लाना चाहिए जिसका ज्ञान हमारे पास है हम उसे हीरे की चमक को उसके मोल को समाज में दृष्टिगोचर करें।

इस अंक में सर्वप्रथम समसामयिकी लेख के क्रम में संपादक महोदय डॉ0 विनय कुमार त्रिपाठी द्वारा नयी शिक्षा नीति 2020 – संस्कृत भाषा विषय को उपस्थित किया गया। शोध पत्रों के क्रम में प्रो0 के0के0 तिवारी व ज्योति पाण्डेय द्वारा उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, डॉ0 शिखा तिवारी द्वारा भारत–भारतीः समीक्षात्मक अध्ययन, सौरभ तिवारी द्वारा 'स्मृति त्रिगुणात्मिका सृष्टि में निस्त्रैगुण्य (सांख्ययोग और वेदान्त के परिप्रेक्ष्य में)', डॉ0 इन्दिरा श्रीवास्तव व नीतू शुक्ला द्वारा प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना में गबोकारो जिला की ग्रामीण जनजातीय महिलाओं के जीवन पर प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, प्रो0 मीना सिंह व शैल गुप्ता द्वारा वाद्यों में वाद्य प्रचलित अवनध्द वाद्य 'तबला', डॉ0 राजेन्द्र कुमार मिश्र व संदीप कुमार तिवारी द्वारा आधुनिक युग में अंकीय विपणन, रणनीतियाँ एवं इसकी समस्याए, डॉ0 अल्ताफ व मयंक तिवारी द्वारा संत कवि कबीर की सामाजिक चेतना, डॉ० कृपाशंकर पाण्डेय द्वारा प्राचीन भारतीय सामाजिक चिन्तन के दार्शनिक पक्ष : एक मीमांसा, डॉ0 अच्युत कुमार यादव द्वारा शिक्षण एवं अधिगम में नावाचार, डॉ0 वर्षा रानी द्वारा साहित्यिक शोध – अर्थ – स्वरूप एवं क्षेत्र, इंदुजा दुबे व डॉ अतुल कुमार दुबे द्वारा पवित्रता की प्रतीक मां गंगा को अविरल निर्मल एवं स्वच्छ बनानें में युवाओं की भूमिका, अनुज कुमार सिंह एवं डॉ० आशीष कुमार शुक्ला द्वारा A Study of Performance Appraisal System and Its Impact on Employee Satisfaction and Employee Motivation in Higher, डॉ० राजेश कुमार तिवारी द्वारा Impact of Gandhian Philosophy-Ahimsa in Contemporary Society – An Analysis, जैसे शोध पत्रिका प्रकाशन किया जा रहा है।

पुस्तक समीक्षा के कम में पं0 पृथ्वी पाल त्रिपाठी द्धारा लिखित **"धरती के गीत"** पुस्तक पर डॉ0 विनय कुमार त्रिपाठी की समीक्षा प्रस्तुत है।

ISSN- 2349-3844

शोध मार्तण्ड का यह अंक आप सभी जनों का ज्ञानवर्धन करते हुए अपनी आभा बिखेरता रहे यही ईश्वर से कामना है।

शोध मार्तण्ड हेतु आपके सुझाव, समसामयिक लेख, शोधपत्र एवं पुस्तक समीक्षाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

इन्हीं शब्दों के साथ!

सम्पादक
डॉ0 विनय कुमार त्रिपाठी